# एक किए गए

## ( 4:2-6 )

एक औरत की कहानी है, जो रात को अपने दो बच्चों के साथ बाहर रेस्टोरेंट में खाना खाने के लिए गई थी। वे खा ही रहे थे कि रेस्टोरेंट में भीड़ होने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे यह परिवारों का मिलन हो। आने वाले हर व्यक्ति का स्वागत गले मिलकर किया जा रहा था। लोगों के चेहरों पर मुस्कुराहट थी, हॉल ठहाकों से गूंज रहा था। लोग एक दूसरे से कह रहे थे, ''मुझे आपसे प्रेम है,'' और ''अगर आपको किसी चीज की ज़रूरत हो तो मुझे कहिए।''

उस औरत ने रेस्टोरेंट से बाहर जाने से पहले, बैरे से स्वागत करने वालों के बारे में पूछा। बैरे ने बताया, ''ये लोग हर शनिवार शाम को अहाते से पी कर यहां आ जाते हैं।'' उस स्त्री के तेरह वर्षीय लड़के ने पूछा, ''ज़्या आपके यहां ऐसा अहाता है जिसमें हम भी जा सकें?'' उस औरत की ऐसे लोगों में शामिल होने की बड़ी तमन्ना थी जिनमें उसे स्नेह और समर्थन मिल सके।

तन्हा लोगों को अपनी समस्याओं में सहायता कहां से मिल सकती है? उन्हें इतना अपनापन कहां मिल सकता है? उन्हें सज़्बन्ध का ऐसा बोध कहां हो सकता है? ज़्या कोई समूह किसी को ऐसा साथ दे सकता है? लोगों का ऐसा एक समूह है जिसे बहुत पहले परमेश्वर अस्तित्व में लाया था। नया नियम इसे कलीसिया, मसीह की देह, और परमेश्वर का घराना कहता है।

परमेश्वर की इच्छा है कि मसीह की देह उन लोगों को जो तन्हा, तिरस्कृत और संघर्ष कर रहे हैं, स्वीकार करे और उनसे प्रेम करे। उसने कलीसिया को जीवन के हर क्षेत्र से आने वाले लोगों के लिए एक मिलन स्थल बनाया है, जो एक दूसरे के प्रति समर्पित हों, एक दूसरे की सेवा करते हों, एक दूसरे के प्रति दयालु हों, क्षमा करने वाले, प्रोत्साहन देने वाले और एक किए गए हों।

इस मूल सच्चाई पर विचार करें: *जितना हम मसीह की देह के रूप में एक होंगे, उतना ही लोगों को हम आसानी से दिखा पाएंगे कि उनके लिए परमेश्वर की ज़्या इच्छा है।*

इस एकता के बारे में पौलुस ने इफिसियों के नाम पत्री में लिखा:

> सो मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूं तुम से बिनती करता हूं, कि जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उसके योग्य चाल चलो। अर्थात सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो। और मेल के बन्ध में आत्मा की

> एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है। एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर, और सब के मध्य में, और सब में है (इफिसियों 4:1-6)।

4:3 में पौलुस ने मसीही लोगों से, ''मेल के बंध में आत्मा की एकता रखने का यत्न'' करने के लिए कहा। ''रखने का यत्न'' के लिए यूनानी शब्द *spoudazo* का अर्थ कुछ पीछे न रखना है। क्रिया का काल संकेत देता है कि हमें ऐसा निरन्तर करते रहना चाहिए।

अपनी कलीसिया के लिए मसीह की यही प्राथमिकता थी। हाथों पर कीलें ठोंके जाने और क्रूस पर चढ़ाए जाने से कुछ समय पहले, यीशु ने प्रार्थना की थी:

> मैं केवल इन्हीं के लिए बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिए भी जो इनके वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों। जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिए कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा।
>
> और वह महिमा जो तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी है कि वे वैसे ही एक हों जैसे कि हम एक हैं। मैं उन में और तू मुझ में कि वे सिद्ध होकर एक हो जाएं, और जगत जाने कि तू ही ने मुझे भेजा, और जैसा तू ने मुझ से प्रेम रखा, वैसा ही उन से प्रेम रखा (यूहन्ना 17:20-23)।

यीशु को प्रेम में एक दूसरे की सहने और आत्मा की एकता बनाने के लिए कुछ भी करने को तैयार लोग मिलने की उम्मीद है। वह इस प्रतीक्षा में है कि कब उसकी प्रार्थना का उत्तर मिलता है।

यह एकता कैसे पाई जाती है?

## परमेश्वर एकता देता है

एकता परमेश्वर की ओर से ही मिलती है। पौलुस ने सात ''एक'' बताए हैं: ''... एक ही देह, ... एक ही आत्मा ... एक ही आशा ... एक ही प्रभु ... एक ही विश्वास, ... एक ही बपतिस्मा ... एक ही परमेश्वर।'' ध्यान दें कि इन सात वाक्यांशों में ज़ोर परमेश्वर पर, विशेषकर परमेश्वर के एक ही होने पर दिया गया है। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक ही हैं। त्रिएकत्व में किसी प्रकार का कोई विरोधाभास नहीं है। परमेश्वरत्व में संपूर्ण एकता मिलती है।

परमेश्वरत्व की इस दूसरे संसार की एकता से इस संसार में उस एकता का प्रभाव आता है। यह प्रभाव मसीह की देह में मिलता है। वह एक देह परमेश्वर की नज़र और मन में एक हो जाती है। देह केवल एक ही है क्योंकि एक ही आत्मा है, जो इसे एक करता है।

हमारे संसार में यह एकता एक आशा, एक विश्वास, एक बपतिस्मा और सबसे

बढ़कर एक ही प्रभु में आती है। हम एक ही प्रभु में विश्वास करते हैं। हमारा बपतिस्मा एक ही प्रभु में होता है। और हम एक ही प्रभु के आने की प्रतीक्षा करते हैं।

यह एकता हमारे संसार में एक ही परिवार अर्थात परमेश्वर के घराने में मिलती है। हमारा ''एक ही परमेश्वर और पिता है, और जो सबके ऊपर है, और सबके मध्य में, और सब में है'' इसलिए परिवार केवल एक ही है।

पौलुस ने मसीही लोगों से ''मेल के बंध में आत्मा की एकता रखने का यत्न'' करने के लिए कहकर एकता *बनाने* का निर्देश नहीं दिया। यह काम केवल परमेश्वर ही कर सकता है। हम मसीह के पास आकर एक होते हैं। हमारा पिता और प्रभु वही है, और आत्मा भी जो हम में वास करता है, एक ही हैं। परमेश्वर ने इसे ऐसे ही देखा है।

बाइबल हमें परमेश्वर पर ध्यान लगाने के लिए कहती है। यह मसीही लोगों से परमेश्वर अर्थात पिता, पुत्र और आत्मा की ओर देखने को कहती है। हमें उसे संपूर्ण एकता के परमेश्वर, पवित्र मेल के परमेश्वर, ईश्वरीय एकता के परमेश्वर और अनादि संगति के रूप में देखना चाहिए। परमेश्वर में हमें एकता, मेल और प्रेम का असली अर्थ मिलता है। परमेश्वर में इन गुणों को देखने के बाद, हम मसीह की देह के द्वारा अपने संसार को उन्हें दिखाने की कोशिश करते हैं।

## एकता को बढ़ाने वाले गुण

हम एकता बना तो नहीं सकते, परन्तु ऐसा व्यवहार अवश्य कर सकते हैं, जिससे एकता को बढ़ावा मिले। पौलुस ने मसीही लोगों से ''सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर ...'' चलने के लिए कहा (4:2)। इस प्रेरित ने तीन आवश्यक गुण बताए हैं।

पहला, उसने मसीही लोगों से पूरी ''दीनता'' रखने के लिए कहा।[1] दीनता कहां से आती है ? ज्या दीनता कोई ऐसी चीज है, जिसे आप यूं ही पाने का फैसला कर सकते हैं ?

दीनता परमेश्वर से मेल के कारण आती है। बाइबल के उन सभी लोगों में, जो दीनता की मिसाल थे, एक बात सामान्य थी कि उनकी भेंट परमेश्वर से हुई थी। वे परमेश्वर की महानता, सामर्थ तथा महिमा से चकित हुए थे। अब्राहम की भेंट मोरियाह पर्वत पर (उत्पज़ि 22:1-18) और मूसा की जलती हुई झाड़ी के पास हुई (निर्गमन 1:3-4:17)। दाऊद सृष्टिकर्ज़ा के तारों की दस्तकारी पर ध्यान करके हैरान रह गया था (भजन संहिता 19)। यशायाह नबी को अपनी ही कमी का अहसास हुआ था, जब उसने मन्दिर में आमने सामने प्रभु को देखा था (यशायाह 6:1-5); और पतमुस में निर्वासन के दौरान, प्रेरित यूहन्ना मनुष्य के पुत्र के कदमों में गिर गया था (प्रकाशितवाज्य 1:12-17)। परमेश्वर की महानता से भेंट लोगों को घुटनों पर ला देती है।

हमारे अन्दर घमण्ड तब तक रहता है जब तक हमें परमेश्वर की महानता का बोध नहीं होता। घमण्ड के कारण परमेश्वर की हमारी धारणा वैसे ही छोटी हो जाती है जैसे फोटोस्टेट की मशीन पर एक तस्वीर हमारी मर्जी के आकार की बन जाती है। घमण्ड के कारण हमें लोगों में अच्छाई नज़र नहीं आती है। परमेश्वर की महानता का सामना करने पर

हमें मूल्यों की सही समझ आ जाती है। परमेश्वर को वैसे देखने से जैसा वह है, सचमुच में दूसरों को देखने का हमारा दृष्टिकोण ही बदल जाता है।

पौलुस ने ''नम्रता'' से एकता को बढ़ाने वाला दूसरा गुण बताया है।[2] नम्रता ज़्या है? मैं आपको दिखा सकता हूं कि यह ज़्या नहीं है। एक दिन मैंने ट्रैफिक लाइट पर अपनी कार रोकी। दूसरी ओर से आने वाली एक कार को बाईं तरफ मुड़ने का संकेत दिया गया था। उसका ड्राइवर कार को मेरी ओर मोड़ रहा था, या उसकी ऐसी मंशा थी। दुर्भाग्य से, मोड़ते हुए ऐसा लगा जैसे कार में कुछ गड़बड़ी आ गई हो। इसका इंजन बंद हो रहा था और उसमें से आवाज़ें आ रही थीं। इस कार के पीछे एक तेज़ हरा ट्रक था, जिसका ड्राइवर चिढ़ गया था ज़्योंकि उसने काम करने के लिए और कई जगह जाना था। वह उस खराब कार पर ज़ोर-ज़ोर से हॉर्न बजा रहा था और इसके ड्राइवर को गालियां दे रहा था।

मैंने विचार किया, ''जो लोग हमारी मर्ज़ी के मुताबिक काम नहीं करते हम उनसे ऐसा ही व्यवहार करते हैं। जब लोग गड़बड़ी करते हैं, गलती करते हैं या हमारी उम्मीद के अनुसार खरा नहीं उतरते तो हमें उन पर क्रोध आता है।''

यीशु हमसे बिना क्रोध या असंतोष प्रकट किए उनसे विनम्रता से पेश आने को कहता है। यीशु हमें अपना आत्मा देता है ताकि हम विनम्र बन सकें।

एक तीसरा गुण जो कलीसिया में एकता को बढ़ावा देता है, वह है ''धीरज'' (यू.: *makrothumia*)। मूल यूनानी शब्द का अर्थ है ''धीरज वाला।'' इसमें वह विचार है, जो उस शब्द का बिल्कुल विपरीत है जिसका अर्थ ''गुस्से वाला'' है। गुस्सा या क्रोध करने वाले लोग कलीसिया में नहीं हैं।

ज़्या कभी आपने भोजन के पैकेट पर लिखे हुए शब्दों पर ध्यान दिया है? पैकेट पर एक ओर आम तौर पर पौष्टिक भोजन के लिए कम से कम तत्वों की मात्रा लिखी होती है। इसमें हमारे स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक विटामिन भी बताए गए होते हैं। हमारी इस आयत में, पौलुस ने प्रभु की कलीसिया में एकता के लिए कम से कम आवश्यकताएं अर्थात दीनता, विनम्रता और धीरज बताया है।

## एक कार्य जिससे एकता बनी रहती है

एकता को बनाए रखने के लिए आवश्यक गुणों के अलावा पौलुस ने एक आवश्यक कार्यवाही करने के लिए भी बताया। उसने इसे ''प्रेम से एक दूसरे की सह'' लेना कहा (4:2)। इसके लिए लोगों की सहना आवश्यक है, परन्तु निष्क्रिय रूप में नहीं। यह केवल अपने दांत किटकिटाना, हाथ मिलाना और यीशु के दोबारा आने तक एक दूसरे की सहना ही नहीं बल्कि एक दूसरे का सक्रिय रूप से भला चाहना है।

हमें ''प्रेम'' शब्द को अनदेखा नहीं करना चाहिए। *प्रेम से* एक दूसरे की सहनी चाहिए। पौलुस के प्रेम के चित्रण को याद रखें:

> प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं

करता और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता (1 कुरिन्थियों 13:4, 5)।

ऐसोप ने एक मोर और सारस की यह कहानी बताई है:

> एक दिन मोर और सारस की मुलाकात हो गई। मोर अपने सुन्दर पंख फैलाते हुए सारस की ओर घृणा से देखते हुए ऐसे मुड़ा जैसे कि वह केवल एक साधारण प्राणी हो और उसे देखना उसकी शान के खिलाफ हो।
>
> सारस को उसका यह गुस्ताख़, घमण्डपूर्ण व्यवहार अच्छा नहीं लगा, सो उसने मोर को सुनाते हुए ऊंचे स्वर में कहा, ''सुन्दर पंखों के कारण मोर अच्छे पक्षी तो होते होंगे, परन्तु उनके बादलों पर ऊंचा न उड़ पाने की बात बहुत दुखी करने वाली है। फिर सारस ने अपने विशाल, मज़बूत पंख फड़फड़ाए और मोर को निराश करके चला गया।''[3]

जब तक स्थानीय मण्डलियां होंगी, परिपज़्वता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, वैवाहिक स्थिति, उम्र, रुचियों और व्यज़्तित्व में अन्तर तो रहेगा ही। परमेश्वर ने मोर को भी बनाया है और सारस को भी और उसी ने उनमें अन्तर रखा है। परमेश्वर ने हमें भी बनाया है। उसने हम सबको अलग-अलग बनाया, उसी प्रभु ने, जो आपका उद्धार करता है, मुझे बचाया है। वही पवित्र आत्मा, जो आप में रहता है आपके पास बैठे दूसरे मसीही में भी वास करता है। वह पिता, जो आपको अपनी संतान कहता है, स्थानीय कलीसिया के हर सदस्य को भी अपनी संतान के रूप में देखता है।

हां, मैं जानता हूं कि आप अपने चारों ओर देखकर ऐसे लोगों को देख सकते हैं जिनका व्यवहार वैसा नहीं होता जैसा परमेश्वर की संतान का होना चाहिए। मेरे लड़खड़ाने पर परमेश्वर चाहता है कि आप प्रेम से मेरी सह लें। आपके डगमगाने पर वह चाहता है कि मैं आपकी सह लूं। एक दूसरे से दूरी बनाए रखकर मसीह में न तो आपकी उन्नति हो सकती है और न मेरी।

## सारांश

मसीह की देह से एक ऐसा विश्वास भरा समाज मिलता है, जिसे परमेश्वर ने सारे संसार के देखने के लिए बनाया है। कलीसिया में लोगों को मित्रता, आशा, साथ और प्रोत्साहन मिल सकता है। हममें एकता परमेश्वर के स्वभाव के कारण ही आती है। इसी कारण हमें ''मेल के बंध में आत्मा की एकता बनाए रखने'' का यत्न करते रहना आवश्यक है।

स्थानीय कलीसिया में एकता बनाए रखने के लिए आप ज़्या कर सकते हैं?

*जीवन में कलीसिया की एकता को सबसे अधिक प्राथमिकता दें।* एकता का आधार परमेश्वर के स्वभाव में है। इसे सबसे अधिक महत्व दें। मण्डली में एकता के लिए और इसे मजबूत बनाने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें। एकता के लिए आपकी व्यज़्तिगत प्रार्थनाओं

को प्रभु अवश्य सुनेगा।

*एक दूसरे की सहने का गुण अपनाएं।* झगड़े का कारण स्वार्थ और घमण्ड हो सकता है। दोनों ही परमेश्वर की महानता के सामने खत्म हो जाते हैं। लोगों के साथ हमारी समस्या वास्तव में लोगों की बिल्कुल नहीं है। यह समस्या परमेश्वर को जानने की हमारी अपनी कमी है। हमें परमेश्वर के गीत गाने चाहिए, भजन पढ़ने चाहिए जिनसे परमेश्वर की महिमा हो, उसकी उपस्थिति में बैठना चाहिए और अपने मन उस पर लगाने चाहिए। हम हैरान होंगे कि इससे दूसरों के प्रति हमारे व्यवहार में कैसा परिवर्तन आता है।

*कार्य करें।* इस बात की पहचान करें कि कलीसिया को एक करने में कौन सी बात सहायक हो सकती है, और उसे करना आरज़्ज़ कर दें। यह बात गप्पें मारने से इन्कार करना, किसी से सुलह करना, सज़्बन्ध सुधारने की पहल करना, किसी को प्रोत्साहित करने के लिए हर सप्ताह कम से कम एक खत लिखना, दूसरों में अच्छाई ढूंढ़ने का फैसला करना, बातचीत करने में अधिक सकारात्मक होना, दो लोगों में फिर से सुलह करवाने वाले होना या किसी को ''गोद लेने'' का विशेष प्रयास करना हो सकता है, जिसका सज़्बन्ध कलीसिया के दूसरे लोगों से अधिक न हो।

प्रेम से एक दूसरे की सह लो। दूसरों के साथ सहने में संघर्ष करते हुए, उस संघर्ष पर काबू पाने के लिए परमेश्वर से सहायता मांगें। उन लोगों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करें और उनके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें।

यदि हम ''मेल के बंध में आत्मा की एकता को बनाए रखने का यत्न'' करें, तो यीशु को यूहन्ना 17 में अपनी प्रार्थना का उज़र मिल जाएगा, ज़्योंकि उसके लोग आत्मा में एक होंगे... जिनका प्रभु एक ही है।

---

टिप्पणियां

[1]''दीनता'' के लिए यूनानी शज़्द *tapeinophrosune* है। इसका अर्थ मन की वह अधीनता है जो यीशु के उदाहरण और परमेश्वर की मांग की रोशनी में अयोग्यता के सही बोध से मिलती है। [2]''विनम्रता'' के लिए यूनानी शज़्द *prautes* है। यूनानी लोग इसे ऐसे लोगों या वस्तुओं के लिए इस्तेमाल करते थे जिनसे विशेष आराम का पता चलता था, जैसे कोई मरहम जिससे जले की पीड़ा से राहत मिलती थी। यह हमें लोगों के साथ कठोर और कोमल दोनों होने की अनुमति देती है: कठोर तब होना चाहिए जब आवश्यकता हो और कोमल तब जब कोमलता ही आवश्यक हो। [3]*ऐसॉप'स फेबल्स* (नौरवाक, कॉनेज़्टिकट.: हैरिटेज प्रैस, 1969), 23.